सारस का उपहार
जापानी लोककथा

बहुत समय पहले, उत्तरी जापान के ऊंचे पहाड़ों के बीच वृद्ध पति और पत्नी रहते थे. वह बहुत गरीब थे लेकिन वह सीधे-सादे, दयालु और भले लोग थे. आसपास रहने वाले सब लोग जानते थे कि वह दोनों ईमानदार थे, एक-दूसरे से प्यार और सब जीवों का सम्मान करते थे.

यद्यपि कि वह बहुत प्रसन्न रहते थे फिर भी कभी-कभी वह बहुत अकेला महसूस करते थे. वह अपने एकाकी जीवन के बारे में सोचते थे और कामना करते थे कि उनका एक शिशु होता, एक बेटी.

हर दिन वृद्ध आदमी पहाड़ों पर जाता और वहाँ से लकड़ी इकट्ठी कर के लाता, जिसे जला कर वह कोयला बनाता. महीने में एक बार वह नगर जाता और जो कोयला उसने बनाया होता उसे बेच डालता. इस तरह अपनी पत्नी और अपने लिए वह आजीविका कमाता.

जब शीत ऋतु आती तो पहाड़ों पर सफेद मुलायम बर्फ गिरती और वृद्ध दम्पति के घर के चारों ओर, मीलों तक, बर्फ की सफेद चादर बिछ जाती. आकाश में घने, काले बादल गिर आते और बीती हुई ऋतुओं के सारे रंग मटमैले हो जाते.

एक शाम जब कड़ाके की ठंड पड़ रही थी और बहुत बर्फ गिर रही थी और पहाड़ों पर चलती ठंडी हवा और भी ठंडी और तेज़ हो गई थी, वृद्ध आदमी नगरवासियों को अपना कोयला बेच कर नगर से लौट रहा था. वह बहुत थका हुआ था. ठंड में काँपते हुए वह उस पहाड़ी रास्ते पर धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था जो उसके आराम-दायक घर और उसकी पत्नी की ओर जाता था. अचानक मुसीबत में फंसे किसी पक्षी की दर्द से चिल्लाने की आवाज़ उसे सुनाई दी.

"यह आवाज़ कहाँ से आ रही है?" वृद्ध ने अपने आप से कहा.

लगातार गिरती हुई बर्फ के बीच से उसने देखने का प्रयास किया. उसे शिकारी का एक शिकंजा दिखाई दिया जिस में एक सुंदर, सफेद सारस फंसा हुआ था. शिकंजे से छूटने का जितना अधिक प्रयास वह सारस करता, उतना ही शिकंजा उसके पाँव पर कसता जाता. वृद्ध को दिखाई दे रहा था कि सारस शिकंजे से छूट नहीं सकता था.

"ओह, बेचारे पक्षी! अगर ऐसी दशा में किसी ने तुम्हें देख लिया तो निश्चय ही वह तुम्हें पकड़ कर ले जाएगा," सारस की ओर जाते हुए वृद्ध ने धीमे से कहा. फिर वह घुटनों के बल बैठ गया और शिकंजे को खोलने लगा.

“घबराओ नहीं, मैं तुम्हारी सहायता करने आया हूँ. लगता है तुम्हारे पाँव में चोट लग गई है,” वृद्ध ने बड़े प्यार से कहा.

ऐसा लगा कि सारस उसकी बात समझ रहा था, वह स्थिर खड़ा हो गया. उसे विश्वास दिलाने के लिए सारस ने अपना सिर वृद्ध के चेहरे से छुआ और प्रसन्नता और प्यार भरी आवाज़ें निकालने लगा.

सारस जब शिकंजे से छूट गया तो उसने अपने पंख फड़फड़ाये, आगे भागा और फिर उड़ कर आकाश में चला गया. आकाश में जाकर सारस एक बार वापस घूमा, जैसे कि वह उस वृद्ध को अंतिम बार देख लेना चाहता था. उसे देखते हुए वह ज़ोर से चिल्लाया.

“धन्यवाद,” वृद्ध को लगा उसकी पुकार का यह अर्थ था.

सारस ने उसके ऊपर आकाश में तीन चक्कर लगाये और आखिरकार उड़ कर दूर चला गया. वृद्ध सारस को देर तक देखता रहा. वह छोटा, और छोटा होता गया और फिर दूर पहाड़ों के ऊपर गायब हो गया.

बहुत बर्फ गिर रही थी और हवा तेज़ चल रही थी फिर भी वृद्ध को अपने मन में बहुत अच्छा महसूस हो रहा था.

“किसी के साथ भला करके लोग अवश्य ही ऐसा ही महसूस करते होंगे,” उसने सोचा. वह जानता था कि सारस की जान बचा कर उसने एक भला काम किया था. इसलिए वह प्रसन्न था.

शाम के समय, आग तापते हुए, वृद्ध ने अपनी पत्नी को बताया कि दिन में उसने एक भला काम किया था.

“वह सारस कितना प्रसन्न और शांत दिखाई दे रहा था,” उसने बताया.

फिर वह बैठ कर बातें करते रहे कि नगर में उसे कौन-कौन लोग मिले थे और उसने अपना दिन कैसे बिताया था. वह बिस्तर पर जाकर सोने ही वाले थे कि दरवाज़ा खटखटाने की आवाज़ उन्होंने सुनी.

“ऐसी भयंकर रात में कौन हमारे घर आया होगा?” वृद्ध औरत ने कहा. “पति देव, देखो इस ठंडी और बर्फीली शाम में कौन आया है.”

वृद्ध दरवाज़े के पास गया और दरवाज़ा खोला. दरवाज़े पर एक सुंदर युवती को देख कर वह आश्चर्यचकित हो गया. युवती ने रेशम का शानदार सफेद किमोनो पहना हुआ था. कमर तक लटके उसके लम्बे बाल काले रंग के थे. उसकी त्वचा सफेद पोर्सिलिन समान चमक रही थी.

“मुझे खेद है कि आप लोगों को मैं इस समय कष्ट दे रही हूँ,” उसने मधुर वाणी में कहा. “मैं अपने सम्बंधियों से मिलने जा रही हूँ जो पास के नगर में रहते हैं. लेकिन लगता है कि इस भयंकर बर्फ़ानी तूफ़ान में मैं अपने रास्ते से भटक गई हूँ. क्या सिर्फ एक रात आप मुझे यहाँ रुकने दे सकते हैं?”

जब वह द्वार पर खड़ी थी, एक कोमल और प्यारी मुस्कान उसके होंठों पर दिखाई दी. वृद्ध और उसकी पत्नी ने देखा कि युवती कांप रही थी और उसके नाज़ुक हाथ थरथरा रहे थे, क्योंकि ठंड बहुत ज़्यादा थी.

“बच्ची, अंदर आ जाओ और आग के पास बैठ कर अपने को गर्म कर लो,” वृद्ध ने उस पर दया करते हुए कहा. “तुम हमारे साथ एक रात रुक सकती हो.”

“जितनी देर चाहो उतनी देर तुम हमारे साथ रह सकती हो,” वृद्ध औरत ने मित्र भाव से कहा.

“आपके इस प्रस्ताव के लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद. क्या सच में मैं जब तक चाहूँ तब तक यहाँ रह सकती हूँ?” युवती ने अपने कपड़ों से बर्फ साफ करते और अपने पाँव पोंछते हुए पूछा.

“हाँ, निश्चय ही,” वृद्ध ने कहा, “जब तक चाहो तुम यहाँ रह सकती हो.”

“आओ, आग के निकट आकर अपने कपड़े सुखा लो,” उसकी पत्नी ने कहा. “रात भर अच्छी तरह सोने के बाद हम सुबह इस विषय पर बात करेंगे.” अगले दिन इतनी अधिक बर्फ गिरी कि दरवाज़ा खोलना भी संभव न था. पाँच या छह दिन बर्फ गिरती रही और युवती उन्हीं के साथ रही. हर समय वह यही सोचती रही कि उनके अतिथि-सत्कार का प्रतिदान कैसे करे.

"मैं आप से एक निवेदन करना चाहती हूँ," युवती ने वृद्ध दम्पति से कहा.

बात करते-करते वह रुक गई. वृद्ध दम्पति को वह युवती बेटी समान लगने लगी थी. उन्होंने उसे अपनी बात कहने के लिए प्रोत्साहित किया.

"हाँ बताओ," वह बोले. "हम तुम्हारे लिए क्या कर सकते हैं?"

उसने बताया कि किस तरह उसने अपने माता-पिता को खो दिया था. जिस रात उसने उनके घर का दरवाज़ा खटखटाया था, वह पास के नगर में रहने वाले अपने संबंधियों से मिलने जा रही थी. लेकिन बर्फानी तूफ़ान में वह रास्ते से भटक गई थी.

फिर उसने कहा, "जिस प्रकार से आपने मेरे माता-पिता की जगह ले ली है वह लोग कभी नहीं ले सकते थे. मैंने अवश्य ही कई अच्छे कर्म किये होंगे जो मैं आपके द्वार पर आ पहुंची. क्या मैं आपके साथ आपकी बेटी बन कर रह सकती हूँ?"

"अपने माता-पिता के बिना तुम कितनी एकाकी होगी," वृद्ध दम्पति ने कहा. "तुम कितनी समझदार और दयालु युवती हो. अगर तुम हमारी बेटी बन जाओ तो हम दोनों को बहुत प्रसन्नता होगी."

इन प्रिय शब्दों के साथ वह युवती वृद्ध दम्पति के साथ उनकी बेटी बन कर रहने लगी. वह नहीं जानती थी कि उसके निर्णय ने उन्हें कितनी ख़ुशी दी थी.

जब सर्दी बीत गई और वसंत ऋतु आई और चैरी के पेड़ों पर खिले हुए फूलों ने सारे क्षेत्र को गुलाबी पुष्प पुंजों में परिवर्तित कर दिया था, तब उस लड़की ने वृद्ध से दूसरा निवेदन किया.

“क्या आपके घर में करघा है? मैं कपड़ा बुनना चाहती हूँ.”

“हाँ, हमारे पास है,” वृद्ध ने कहा. “एक करघा है जिस पर मेरी पत्नी कपड़ा बुना करती थी जब वह युवा थी.”

यह बताते हुए वह उसे उस कमरे में लाया जहाँ पर वह करघा रखा था. वहाँ पर रंग-बिरंगे धागों की फिरकियों से भरे हुए कई डिब्बे भी थे.

युवती ने तब वृद्ध से कहा, “मुझे आपसे एक महत्वपूर्ण निवेदन करना है. आपको वचन देना होगा कि जब मैं करघे पर काम करूंगी तो आप और आपकी पत्नी इस कमरे का दरवाज़ा कभी नहीं खोलेंगे.”

वृद्ध ने वचन दिया कि उसे काम करते हुए वह कभी नहीं देखेंगे. पर उसे लगा कि यह एक विचित्र मांग थी.

“कृपया, अब आप चले जाएँ और दरवाज़ा बंद कर दें,” उसने विनम्रता से कहा.

युवती सुबह से लेकर देर रात तक काम करती रही. उसने न आराम किया न कुछ खाया. बंद दरवाज़े के दूसरी ओर वृद्ध और उसकी पत्नी करघे की लयबद्ध आवाज़ सुनते रहे, *क्रीक,टैप क्लेप.... क्रीक,टैप,क्लेप.... क्रीक,टैप,क्लेप....*

जिस दिन युवती ने बुनाई शुरू की उसके चार दिन बाद करघे की आवाज़ अचानक बंद हो गई. इसके पहले कि वृद्ध दम्पति कुछ समझ पाते कि क्या हुआ था, वह लड़की कमरे के दरवाज़े पर दिखाई दी. उसके हाथ में कपड़े का एक रोल था.

“कितना सुंदर कपड़ा है!” वह एक साथ बोले. “हमने अपने पूरे विवाहित जीवन में ऐसा अनूठा कपड़ा नहीं देखा.”

“यह मैंने आपके लिए बुना है,” युवती ने कहा. “कल इसे आप नगर में ले जाकर बेच दें. मुझे विश्वास है कि इसे बेच कर आपको अच्छे पैसे मिल जायेंगे.”

अगले दिन वृद्ध नगर गया और चिल्लाने लगा, “कपड़ा! कपड़ा! मेरा सुंदर कपड़ा कौन खरीदना चाहेगा?”

जिसे भी वृद्ध ने अपना कपड़ा दिखाया, वह उसकी कारीगरी और गुणवत्ता देख कर चकित रह गया.

एक नागरिक ने कपड़ा देख कर बोला, “महाशय, यह सिर्फ कपड़ा नहीं है. यह ज़रीवस्त्र है. ऐसा सुंदर ज़रीवस्त्र मैंने अपने जीवन में पहले कभी नहीं देखा. अरे, हमें तो इसे महल में ले जाना चाहिए ताकि सामंत इसे देख सकें.”

उस शानदार ज़रीवस्त्र को देख कर सामंत ने कहा, “यह तो सच में बहुत ही सुंदर है. इस कपड़े से मैं अपनी बेटी के लिए एक अद्भुत किमोनो बनवा सकता हूँ. मैं इसे तुम से खरीदना चाहता हूँ.”

इन विनीत शब्दों को कहने के बाद उसने वृद्ध को बहुत सारे सोने के सिक्के दिए.

फिर उसने कहा, “महाशय, दुबारा भी आइये. आपका कपड़ा इतना सुंदर है कि जितना भी आप लेकर आयंगे मैं वह सारा खरीद लूँगा.”

घर पहुँचते ही वृद्ध ने अपनी पत्नी और युवती को बताया कि किस तरह उसने सारा कपड़ा सामंत को अच्छे दाम लेकर बेच दिया था.
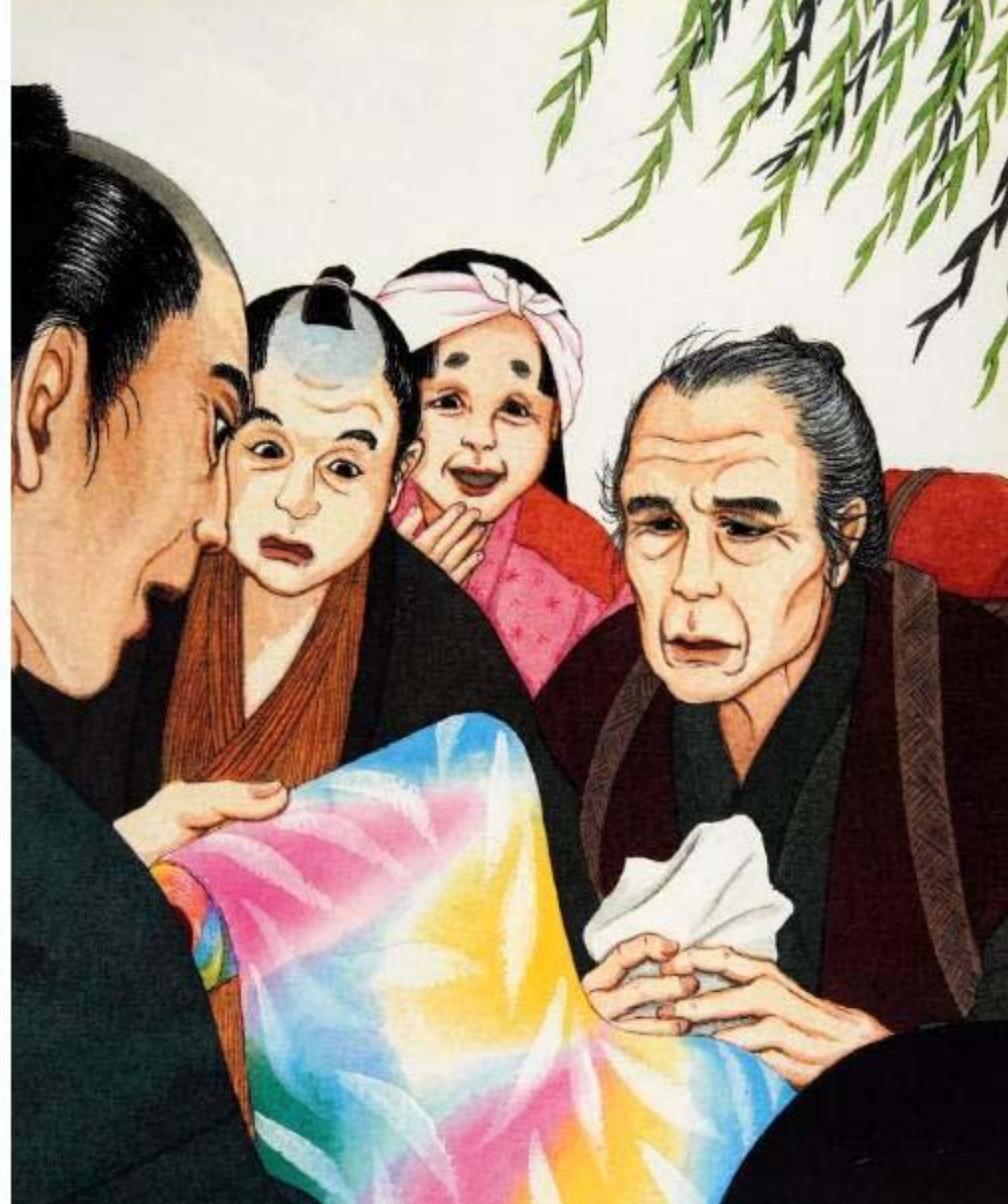
वसंत के बाद ग्रीष्म ऋतु आ गई थी. वर्षा ने आसपास की सारी भूमि पर रंग बिखेर दिए थे, कहीं मॉर्निंग ग्लोरी के नीले और गुलाबी फूल थे तो कहीं आइरिस और हाईड्रेनजिया के गहरे नीले और बेंगनी रंग के फूल खिले थे.

लेकिन युवती को ऋतु के इस परिवर्तन का कोई आभास न था क्योंकि वह सुबह से लेकर देर रात तक काम करती रहती थी. . बंद दरवाज़े के दूसरी ओर वृद्ध और उसकी पत्नी ने फिर से करघे की लयबद्ध आवाज़ सुनी, *क्रीक,टैप,क्लेप.... क्रीक,ट्रैप,क्लेप....*

अपने मन में वृद्ध पति-पत्नी कल्पना कर सकते थे कि कमरे के अंदर करघे पर बैठी लड़की किस तरह काम कर रही थी. कमरे के भीतर देखने की लालसा को दबा पाना उनके लिए कठिन हो रहा था. वह उसे काम करते हुए देखना चाहते थे क्योंकि वह जानना चाहते थे की वह कैसे इतना सुंदर ज़रीवस्त्र बुन रही थी. लेकिन वृद्ध को अपना वचन सदा याद रहता था कि जब वह कपड़ा बुन रही होगी तो वह भीतर न देखेंगे.

कई दिनों के बाद वह कमरे से बाहर आई. वह थकी हुई और कमज़ोर दिखाई दे रही थी. लेकिन उसके हाथ में एक ज़रीवस्त्र था जो उस कपड़े से भी अधिक सुंदर था जो उसने पिछली बार बुना था. वृद्ध वह कपड़ा लेकर नगर गया और सामंत को दिखाया.

सामंत उस ज़रीवस्त्र को देख कर इतना प्रसन्न हुआ कि पहले से अधिक धन देकर उसने वह वस्त्र खरीद लिया.

वृद्ध जब वापस जाने लगा तब सामंत ने कहा, “महाशय, ग्रीष्म के अंत में मेरी बेटी का विवाह होगा. उसके विवाह के किमोनो के लिए एक विशिष्ट ज़रीवस्त्र बनाना क्या संभव होगा?” वृद्ध ने उसका निवेदन प्रसन्नता से तुरंत स्वीकार कर लिया.

सामंत से जो धन उसे मिला उसे पाकर वृद्ध और उसकी पत्नी धनी हो गये. उनका जीवन पहले से अधिक आरामदायक हो गया. लेकिन हर दिन के बीतने के साथ युवती कमज़ोर होती गई. जो ऊर्जा उसके भीतर थी वह घटती गई.

वृद्ध को उस लड़की की चिंता हुई और एक दिन उसने उससे कहा, “क्या तुम अस्वस्थ हो? तुम बहुत मेहनत करती ही, सुबह से लेकर रात तक कपड़ा बुनती रहती हो. तुम्हें थोड़ा आराम करना चाहिए.”

“ओह, मैं ठीक हूँ,” उसने मुस्कराते हुए कहा. “सच में, मैं बस थोड़ा और कपड़ा बुनना चाहती हूँ. लेकिन मुझे आपसे एक निवेदन करना है. आप एक बार फिर वचन दें कि जब मैं कपड़ा बुनती हूँ उस समय आप और आपकी पत्नी कमरे का दरवाज़ा नहीं खोलेंगे.”

वृद्ध ने एक बार फिर वचन दिया की वह काम करते समय उसे परेशान नहीं करेंगे. लेकिन पिछली बार की तरह उसे लगा कि यह बहुत ही अजीब माँग थी.

उस रात जब वृद्ध और उसकी पत्नी आग के निकट बैठे थे, वृद्ध ने युवती के स्वास्थ्य को लेकर अपनी चिंता व्यक्त की.

"मुझे भी उसकी चिंता है," पत्नी ने कहा. "ज़रा करघे की आवाज़ सुनो. ऐसा लगता है कि करघा कह रहा है, यह काम कठिन है! यह काम कठिन है!" उस कमरे के निकट जा कर उसने कहा, "क्या मैं भीतर देखूँ?"

"नहीं," वृद्ध ने कहा. "याद रखो मैंने दुबारा उसे वचन दिया है कि जब वह काम कर रही होगी तो हम भीतर नहीं देखेंगे."

लेकिन उसकी पत्नी हठ करने लगी, "बस एक झलक देखूँगी. उसे पता भी न चलेगा."

इतना कह कर वह बाहर आ गई और उस कमरे की खिड़की को थोड़ा सा खोल लिया. भीतर देखते ही, आश्चर्य में उसके मुँह से एक हल्की सी चीख निकल गई.

"क्या बात है?" झटपट उसके पास आते हुए वृद्ध ने पूछा. "तुम ने क्या देखा?"

"यह एक....." पत्नी बोली पर अपनी बात पूरी न कर पाई.

वृद्ध भी अवाक हो गया जब उसने भीतर देखा. क्योंकि भीतर करघे के निकट जहाँ वह लड़की बैठी होनी चाहिए थी, वहाँ एक सुंदर सफेद सारस था. उनके देखते-देखते सारस ने अपना सिर झुकाया और अपनी चोंच से अपने शरीर से एक पंख उखाड़ लिया और ध्यान से उसे कपड़े में बुन दिया.

"यह युवती तो एक सारस है," वृद्ध ने धीमे से कहा. "देखो, सुंदर कपड़ा बुनने के लिए वह अपने पंखों का उपयोग कर रही है. उसके शरीर पर वह खाली स्थान दिखाई दे रहे हैं जहां से उसने पंख उखाड़ दिए हैं."

वृद्ध और उसकी पत्नी ने चुपके से खिड़की बंद कर दी और बिना शोर किये बाहर आ गये. जो कुछ उन्होंने अभी-अभी देखा था उसने उन्हें आश्चर्यचकित कर दिया था.

अगली दिन शाम के समय युवती कमरे से बाहर आई. वह बेहद थकी हुई और कमज़ोर लग रही थी. लेकिन उसके हाथों में एक अति सुंदर ज़रीवस्त्र था.

"आपके लिए मेरे प्यार और स्नेह की अंतिम भेंट समझ कर इसे स्वीकार करें," वृद्ध दम्पति के सामने बैठते हुए उसने कहा. "जैसा सामंत ने आपसे कहा था, उसकी बेटी के विवाह के किमोनो के लिए मैंने यह ज़रीवस्त्र बुना है."

वृद्ध और उसकी पत्नी अवाक हो गये. उन्हें तो वही दृश्य याद आ रहा था जो उन्होंने पिछली रात देखा था.

युवती ने आगे कहा, "पिछले कुछ महीनों में जो कुछ भी आपने मेरे लिए किया है मैं उसके लिए आपका धन्यवाद करना चाहती हूँ, क्योंकि अब अपने परिवार के पास मेरे लौटने का समय आ गया है."

वृद्ध की आँखों से आंसू बहने लगे. वह अपनी पत्नी की ओर घूमा और उसने देखा कि वह भी रो रही थी.

"महाशय," युवती ने उसे दिलासा देने के लिए उसके हाथों को थाम लिया और कहा. "मैं वही सारस हूँ जिसे उस बर्फानी रात में आपने शिकंजे से छुड़ा कर बचाया था. मैं किसी न किसी तरह अपना आभार व्यक्त करना चाहती थी. इस लिए मैंने एक युवती का रूप धारण कर लिया. आपकी मदद करने के लिए मैंने ज़रीवस्त्र की बुनाई की. लेकिन कल रात आप दोनों ने अपना वचन तोड़ दिया और मेरा रहस्य जान लिया. अब सर्दी आने से पहले मुझे दक्षिण की ओर जाना होगा."

युवती ने उदास दृष्टि से पलट कर वृद्ध दम्पति को देखा और दौड़ती हुई घर से बाहर चली गई. भागते-भागते उसने अपने बाँहें फैलाईं और उसी पल वह एक सफेद सारस में परिवर्तित हो गई. उसने अपने पंख फड़फड़ाये और उड़ कर आकाश में चली गई.

"अलविदा और हमारी जो सहायता तुम ने की उसके लिए धन्यवाद" वृद्ध और उसकी पत्नी ने चिल्ला कर कहा.

सारस ने तीन बार उनके सिरों के ऊपर हवा में चक्कर लगाये. और जैसा उसने सर्दी की उस शाम को किया था, उन्हें अंतिम बार देखने के लिए वह पीछे घूमी. ऐसा करते हुए वह ज़ोर से चिल्लाई.

"अलविदा और धन्यवाद," उन्हें लगा कि उसकी पुकार का यह अर्थ था.

वह उसे जाते हुए देखते रहे. वह छोटी, और छोटी होती गई और संध्या के आकाश में फैली लालिमा में वह धीरे-धीरे गायब हो गई.
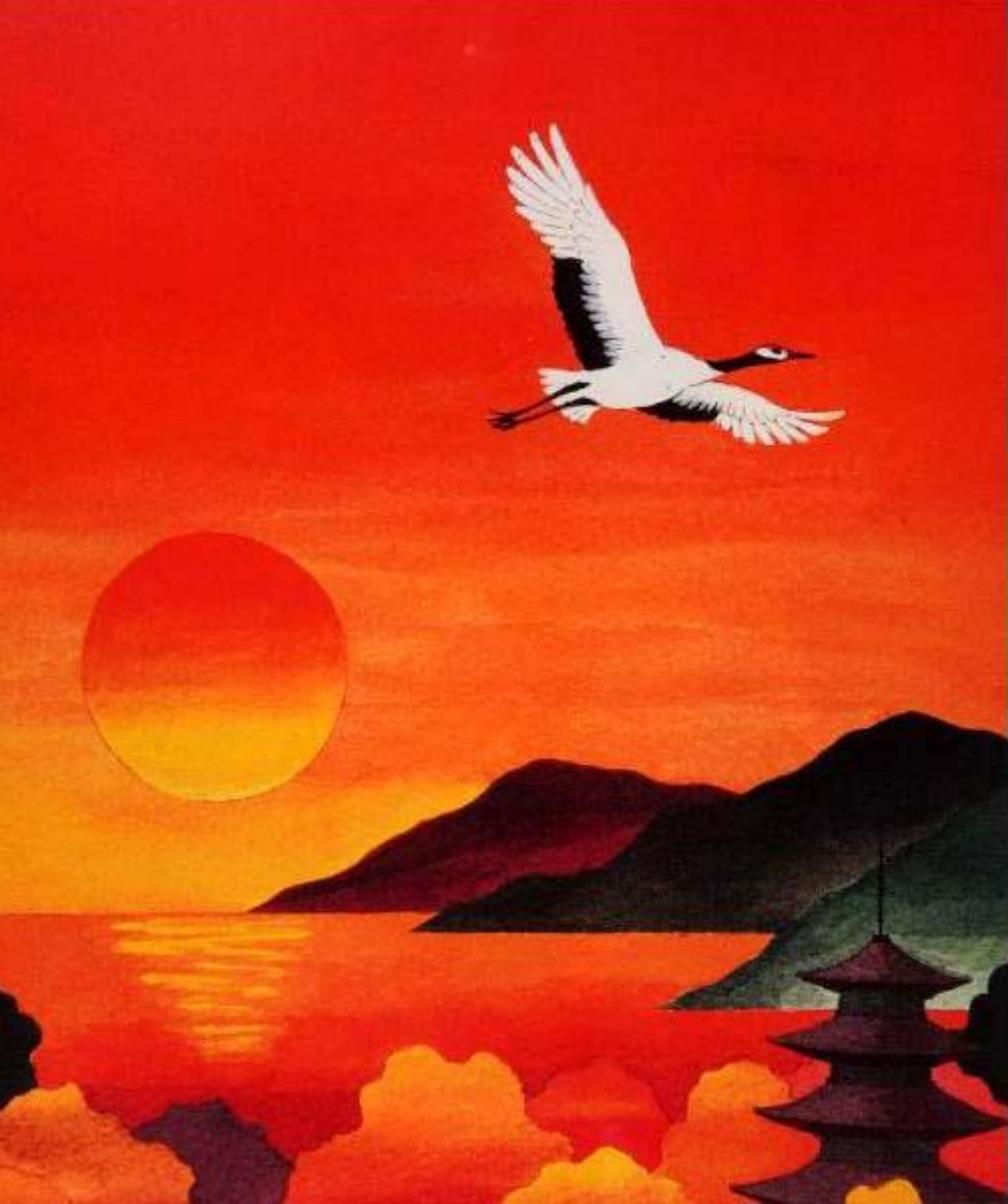
समय बीता. ग्रीष्म के चटकीले रंग शरद ऋतु के स्नेही, नर्म रंगों में बदल गये थे, हवा स्वच्छ और निर्मल थी, फसल पक रही थी, पक्षी दक्षिण की ओर जा रहे थे. संध्या के समय वृद्ध और उसकी पत्नी ने आकाश की ओर देखा. उन्हें एक अकेला सारस ऊपर आकाश में उड़ता हुआ दिखाई दिया. वह सोचने लगे कि क्या यह सारस वह युवती तो नहीं जो उनके साथ रही थी......

समाप्त